www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ०५ ● ३१ जनवरी २०१७ माघ शुक्ल पक्ष चतुर्थी संवत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

आर्यसमाज के वेदसम्मत 10 नियमों के आदर्श पालक ऋषि दयानन्द

- मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाज की स्थापना १० अप्रैल, सन् १८७५ को ऋषि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में की थी। इसका उद्देश्य था विलुप्त वेदों की यथार्थ शिक्षाओं का जन–जन में प्रचार और उसके अनुरूप समाज व देश का निर्माण। महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना उनके वेद विषयक विचारों के प्रशंसकों वा अनुयायियो के अनुरोध पर की थी। आर्य समाज की स्थापना की आवश्यकता क्यों पड़ी, यह प्रश्न समीचीन है। महर्षि दयानन्द

ने सप्रमाण यह तथ्य देश की जनता के सामने रखा था कि सृष्टि के आरम्भ में महाभारत काल के लगभग १.६६०८४८ अरब वर्षों में भारत सहित भूमण्डल पर वेदों का प्रचार प्रसार था, आर्यों का सार्वभौमिक चक्रवर्ती राज्य था और वेदों के अनुसार ही सर्वत्र व्यवस्थायें एवं परम्परायें प्रचलित थी। महाभारत युद्ध के इस दुष्प्रभाव के कारण राजनैतिक, सामाजिक व शैक्षिक सभी व्यवस्थायें अस्त–व्यस्त हो गईं थीं। इसका कुपरिणाम यह भी हुआ कि धर्म व सामाजिक परम्परायें जो वेद के अनुसार चलती थी, वेदों के समुचित अध्ययन– अध्यापन न होने के कारण उनमें अज्ञान व अंधविश्वास उत्पन्न होने लगे। इसका एक कारण यह था कि ऋषि मुनियों द्वारा वेद के गम्भीर विषयों पर जो व्यवस्थायें दी जाती थीं, ऋषियों की अनुपस्थिति के कारण वह परम्परायें भी समाप्त प्रायः हो चुकी थी। अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न होने आरम्भ हुए और समय के साथ–साथ इनमें वृद्धि होगी।

हमारा देश वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था जिसमें ब्राह्मण वर्ण अन्य तीन वर्णों की अपेक्षा प्रमुख था। ब्राह्मणों के कर्तव्य हैं वेदों को पढ़ना व पढ़ाना, यज्ञ करना व कराना तथा दान देना व दान लेना। ऋषियों व वेदों के मर्मज्ञ विद्ववान न होने कारण अल्पज्ञ पण्डितों में अज्ञान के करण देश व समाज में अनेक मिथ्या विश्वास प्रचलित हुए जो आज तक चले आयें हैं और उनमें उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। यदि मुख्य अन्धविश्वासों की चर्चा करें तो इनमें मूर्तिपूजा, फलित ज्योषि, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन व विद्याध्ययन से वंचित करना आदि सम्मिलित थे। गुरूलीय शिक्षा प्रणाली भी ध्वस्त हो गई व वेदाध्ययन भी समाप्त प्रायः हो गया। अज्ञान व अन्धविश्वासों के ही कारण समाज में जन्मना शूद्र वर्ण व दलित बन्धुओं के प्रति असमानता, अप्रीति, अस्पर्शता की भावना, उन पर नाना प्रकार का अन्याय, शोषण व उन्हें मनुष्योचित

शेष पृष्ठ -६ पर

वेदामृतम्

न मा तमन् न श्रमन् नोत तन्द्रन्", न वोचाम मा सुनोतेति सोमम्"।
यो मे पृणाद् यो ददद् यो नि बोधाद्", यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत्:"।।
ऋग् २.३०.७

मैं प्रतिदिन सोम अभिषुत करता हूँ, अपने आत्मा की सोम-वल्ली को ज्ञान और कर्म के सिल-बट्टों से कूट-पीसकर उसमें से भक्ति का सोमरस निचोड़ता हूँ और उसे 'इन्द्र' प्रभु को अर्पित करता हूँ। मेरे उस सोमरस से प्रहृष्ट होकर मेरा प्रभु मुझे पूर्ण-मनोरथ कर देता है। मेरे मन में यज्ञ, तप, स्वाध्याय, सत्य, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, यश, वर्चस्, ज्ञान आदि को प्राप्त करने की अभीप्साएँ होती हैं, उन्हें वह पूर्ण करता है। वह मुझे भौतिक और आध्यात्मिक सम्पत्ति का दान करता है। वह मुझे जागृति और बोध प्रदान करता है। वह मुझे मेरी खोई हुई गौएँ पुनः प्राप्त कराता है। वह मुझे पयोधरों में माधुर्य एवं ओज के दूध से भरी हुई वाणी-रूप गौएँ प्रदान करता है। वह मुझे अन्तश्चक्षु, अन्तः श्रोत्र, अन्तर्मन आदि इन्द्रियों की तृप्ति-प्रदायिनी धेनुएँ देता है। वह अन्तः प्रकाश की कामदुघाएँ अपने साथ लेकर मेरे समीप आता है।

मेरी कामना है कि मेरी भक्ति के सोमरस से पोषित मेरे आराध्य इन्द्र-प्रभु मुझे कभी ग्लानि को प्राप्त न होने दें, कभी म्लान न होने दें। वे मुझे कभी सत्कर्मों से श्रान्त न होने दें, वे मुझे कभी तन्द्रा और आलस्य से ग्रस्त न होने दें। जब-जब मेरे अन्दर कर्तव्य के प्रति ग्लानि के भाव आएँ, जब-जब मैं श्रान्त होने लगूँ, जब-जब मैं स्फूर्ति और जागृति को त्याग कर तन्द्रा और आलस्य से गस्त होने लगूँ, तब-तब 'इन्द्र' प्रभु मेरे पथ-प्रदर्शक बनकर मुझे सन्मार्ग में प्रेरित करते रहें।

सोम-सवन यज्ञिय कर्म है। ज्ञान-यज्ञ का सोमरस, कर्म-यज्ञ में सत्कर्मों का सोमरस, भक्ति यज्ञ में भक्ति का सोमरस, सेवा-यज्ञ में त्याग का सोमरस अभिषुत कराना होता है। यह सोम-सवन आत्म-कल्याण और पर-कल्याण दोनों का साधक है। अतः हम कभी किसी को यह परामर्श न दें कि तुम सोम-सवन मत करो, प्रत्युत सदा सबको सोम-सवन के प्रेरित ही करें। आओ, हम सब मिलकर जगन्मंगल सोम-सवन का निष्पादन करें।

साभार - वेदमञ्जरी

डा० धीरज सिंह पुनः कार्यवाहक प्रधान बनाये गये

श्रीमती गायत्री दीक्षित कार्यवाहक प्रधान से हटी

डिप्टी रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटी एवं चिट्स लखनऊ द्वारा पारित आदेश श्रीमती गायत्री दीक्षित को कार्यवाहक प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के विरूद्ध दाखिल याचिका सं० १८२६/२०१७ में माननीय उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश दि० २५ जनवरी २०१७ को डा० धीरज सिंह को पुनः कार्यवाहक प्रधान घोषित किया है।

संलग्न–आदेश प्रति

Court No.-5
Case:- MISC. SINGLE No. 1829 of 2017

Petitioner : Dr. Dheeraj Singh
Respondent : Registrar Firms Societies & Chits Lko & Ors
Counsel for Petitioner: Anurag Srivastava
Counsel for Respondent : C.S.C., Saket Gupta
Hon'ble Anil Kumar,J.

Heard Shri Anurag Srivastava, learned counsel for the petitioner, learned Standing Counsel for the opposite party nos. 1 and 2 Shri Asit Chaturvedi, learned Senior Advocate assisted by Shri Saket Gupta, learned counsel for the opposite party no. 3 and perused the record.

Learned counsel for the petitioner, for the purpose of interim relief submits that by an order dated 09-11-2016 passed by opposite party no.2, the petitioner was given a charge of Pradhan being UP Pradhan of the society i.e. Arya Pratinidhi Sabha, U.P., Lucknow. Subsequently, the same was recalled by order dated 16-01-2017 is without jurisdiction and arbitrary in nature as the power of review of a statutory authority exercising judicial or quasi-judicial power is not an inherent power. Unless the statute vesting powers in an authority also specifically enumerates the power of review. The said position dose not exist in the present case, so the impugned order dated 16-01-2017 is liable to be stayed.

After hearing learned counsel for the parties and going through the records, prima facie, the submission made by learned counsel for the petitioner is correct, as such, till the next date of listing, operation and impiementation of the impugned order dated 16-01-2017 passed by opposite party no.2/ Deputy Registrar, Firms Socities & Chits, Lucknow Mandal, Lucknow shall remain stayed.

Learned counsel for the respondent prays for and is granted four weeks' time to file counter affidavit. Rejoinder affidavit, if any, may be filed within two weeks thereafter.

List thereafter.

Order Date : 25-1-2017
Mahesh

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

बदलाव की बयार

महाराष्ट्र के कोल्हापुर महानगर में एक मुस्लिम महिला हसीना फारस का मेयर बनना किसी अचम्भे से कम नही हैं जबकि वहाँ के कट्टर पंथी मुस्लिम महिलाओं के चुनाव लड़ने का कड़ा विरोध कर रहे थे इसके बावजूद पांच मुस्लिम महिलाओं ने कोल्हापुर नगर निगम के चुनाव जीतकर मौलिवियों के फतवों को नकार दिया। बेशक यह मुस्लिम महिलायें बधाई की पात्र हैं। जिन्होंने कट्टरपंथियों को आइना दिखा दिया कि वह बदलाव चाहती हैं। तीन तलाक और हलाला जैसे विषयों को लेकर जहाँ बहस छिड़ी हो वहाँ इस जीत से बदलाव को दिशा मिल गयी है।

भारत में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति अन्य जाति कि महिलाओं की तुलना में काफी दयनीय व बदतर है चाहे वह शिक्षा को लेकर हो या फिर स्वावलंबन की बात हो। आर्थिक निर्भरता में तो उनका आंकड़ा काफी कम हैं। देश के विकास और समृद्धि के लिए सभी का शिक्षित और स्वावलम्बी होना आवश्यक है इसके लिए रूढ़िवादी कट्टरता व सोच उचित नहीं है। मुस्लिम लेखिका नूर जहीर तो मुस्लिम पुरुषों के समान महिलाओं को भी तलाक के अधिकार की मांग करके एक नयी बहस को छेड़ दिया है। एक तरफ हिन्दू धर्म में 'जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं'' माना जाता है, वहीं मुस्लिम महिलाओं की बदहाली, अशिक्षा रूढ़िवादी धार्मिक कट्टरता के कारण देश के विकास में भी बाधक बनी हुई है। एक शिक्षित महिला पूरे परिवार की दिशा व दशा बदलने का दम रखती है। जहाँ एक पुरुष की शिक्षा केवल अपने तक सीमित होकर रह जाती है वहीं एक शिक्षित स्त्री पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है। शिक्षित व आत्मनिर्भर होना किसी भी समाज के लिए स्वाभिमान की बात होती है लेकिन मुस्लिम कट्टरपंथियों की सोच इसके विपरीत है। विकास की राह में यह सोच गलत व बेबुनियाद है।

दूसरी तरफ उ०प्र० के मेरठ जिले के ४८२ ग्राम पंचायतों में १६३ महिला ग्राम प्रधानों ने पुरुष ग्राम प्रधानों के मुकाबले गाँवों के विकास को लेकर काफी आगे निकल गयी हैं। इन महिला ग्राम प्रधानों की लगन व कार्यप्रणाली से प्रशासन के अधिकारी भी अचम्भित हैं। आज हर चुनौती पूर्ण कार्य को करने की हिम्मत महिलाओं में है।

महिलायें समाज की मुख्य केन्द्र बिन्दु है उनका चहुँमुखी विकास आवश्यक है हर क्षेत्र में महिलायें पुरुषों के बराबर की सहयोगी हैं चाहें वह वैज्ञानिक, हो स्वास्थ्य हो, रक्षा हो या फिर प्रशासनिक जिम्मेदारी हो। परिवार की जरूरतों को सम्भाल कर आर्थिक सहयोग व देश के विकास में उनका योगदान कम नहीं आंका जा सकता है। महिलाओं के प्रति हो रहे उत्पीड़न व अपराधों के प्रति जागरूकता, कड़े कानून, त्वरित कार्यवाही आदि सुधार अति आवश्यक है। वेदों में नारी को त्यागमयी, पूज्यनीया, वन्दनीया तथा सृष्टिरचना में सहायक कहा गया। मनुमहराज ने इस सम्बन्ध में सत्य ही कहा है, जैसा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास में लिखा है कि '' उत्तम स्त्री, नाना प्रकार के रत्न, विद्या, सत्य, पवित्रता, श्रेष्ठ भाषण और नाना प्रकार की शिल्प–विद्या अर्थात कारीगरी सब देश तथा सब मनुष्यों से ग्रहण करे।

स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या सत्यम् शौचम् सुभाषितम्
विविधानि च शिल्पानि समादेयान सर्वतः।। मनु०।।

अब समय आ गया है मुस्लिम बुद्धिजीवी वर्ग को अपनी संकीर्ण विचारधारा को छोड़कर मुस्लिम महिलाओं को शिक्षित करने व स्वालम्बन के लिए आगे आना चाहिए तभी वह खुशहाल व समृद्ध जीवन जी सकेंगे और देश के विकास को भी गति मिल सकेगी। – कार्यकारी सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

प्रश्न– क्या यह ब्रह्मचर्य का नियम स्त्री वा पुरुष दोनों का तुल्य ही है।

उत्तर– नहीं, जो २५ वर्ष पर्यन्त पुरुष ब्रह्मचर्य करें तो १६ वर्ष पर्यन्त कन्या। जो पुरुष तीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे तों स्त्री १७ वर्ष, जो पुरुष छत्तीस वर्ष तक रहै तो स्त्री १८ वर्ष, जो पुरुष ४० वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री २० वर्ष, जो पुरुष ४४ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री २२ वर्ष, जो पुरुष ४८ वर्ष ब्रह्मचर्य करे तो स्त्री २४ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य सेवन रक्खें अर्थात् ४८ वें वर्ष से आगे पुरुष और २४ वें वर्ष से आगे स्त्री को ब्रह्मचर्य न रखना चाहिये परन्तु यह नियम विवाह करने वाले पुरुष और स्त्रियों का है जो विवाह करना ही न चाहैं वे मरणपर्यन्त ब्रह्मचारी रह सकते हों तो भले ही रहैं परन्तु यह काम पूर्ण विद्या वाले जितेन्द्रिय और निर्दोष योगी स्त्री और पुरुष का है। यह बड़ा कठिन काम है कि जो काम के वेग को थाम के इन्द्रियों को अपने वश में रखना।

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वध्यायप्रवचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च।

–यह तैत्तिरीयोपनिषत् का वचन है।

ये पढ़ने वालों के नियम हैं। (ऋतुं०) यथार्थ आचरण से पढ़े और पढ़ावें, (सत्यं०) सत्याचार से सत्यविद्याओं को पढ़ें वा पढ़ावें, (तपः०) तपस्वी अर्थात धार्मनुष्ठान करते हुए वेदादि शास्त्रों को पढ़ें और पढ़ावें, (दमः०) बाह्य इन्दियों को बुरे आचरणों से रोक के पढ़ें और पढ़ातें जायें, (शमः०) अर्थात् मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटा के पढ़ते पढ़ाते जायें। (अग्नयः०) आहवनीयादि अग्नि और विद्युत आदि को जान के पढ़ते जायें, और (अग्निहोत्रं०) अग्निहोत्र करते हुए पठन और पाठन करें करावें, (अतिथयः०) अतिथियों की सेवा करते हुए पढ़ें और पढ़ावें, (मानुषं०) मनुष्यसम्बन्धी व्यवहारों को यथायोग्य करते हुए पढ़ते पढ़ाते रहैं, (प्रजा०) अर्थात् सन्तान और राज्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जायें, (प्रजन०) वीर्य की रक्षा और वृद्धि करते हुए पढ़ते पढ़ाते जायें, (प्रजातिः०) अर्थात् अपने सन्तान और शिष्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जायें।

यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलान् बुधः।
यमान्पतत्यकुर्वाणो नियमान केवलान भजन्।।मनु०।।

यम पांच प्रकार के होते है–

तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।। योगसूत्र।।

अर्थात् (अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य मानना, सत्य बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) अर्थात् मन वचन कर्म से चोरीत्याग, (ब्रह्मचर्य) अर्थात उपस्थेन्द्रिय का संयम, (अपरिग्रह) अत्यन्त लोलुपता स्वत्वाभिमानरहित होना, इन पाँच यमों का सेवन सदा करें। केवल नियमों का सेवन अर्थात्–

शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणि धानानि नियमाः।। योगसूत्र।।

(शौच) अर्थात् स्नानादि से पवित्रता (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि लाभ में हर्ष वा शोक न करना (तप) अर्थात् कष्टसेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान (स्वाध्याय) पढ़ना पढ़ाना (ईश्वरप्रणिधान) ईश्वर की भक्तिविशेष में आत्मा को अर्पित रखना , ये पांच नियम कहाते हैं। यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करे किन्तु इन दोनों का सेवन किया करे। जो यमों का सेवन छोड़ के केवल नियमों का सेवन करता है वह उन्नति को नहीं प्राप्त होता किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है।

कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहस्त्यकामता।
काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः।। मनु०।।

अर्थ– अत्यन्त कामातुरता और निष्कामता किसी के लिए भी श्रेष्ठ नहीं, क्योंकि जो कामना न करे तो वेदों का ज्ञान और वेदविहित कर्मादि उत्तम कर्म किसी से न हो सकें। इसलिये–

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रेविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं कियते तनुः।। मनु०।।

अर्थ– (स्वाध्याय) सकल विद्या पढ़ते–पढ़ाते (व्रत) ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि नियम पालने (होम) अग्निहोत्रादि होम, सत्य का ग्रहण असत्य का त्याग और सत्य विद्याओं का दान देने (त्रैविद्येन) वेदस्थ कर्मोपासना ज्ञान विद्या के ग्रहण (इज्यया) पक्षेष्टयादि करने (सुतैः) सुसन्तानोत्पत्ति (महायज्ञैः) ब्रह्म, देव, पितृ वैश्वदेव और अतिथियों के सेवन रूप पंच महायज्ञ और (यज्ञैः) अग्निष्टोमादि तथा शिल्पविद्याविज्ञानादि यज्ञों के सेवन से इस शरीर को ब्राह्मी अर्थात् वेद और परमेश्वर की भक्ति का आधाररूप ब्राह्मण का शरीर बनता है। इतने साधनों के बिना ब्राह्मणशरीर नहीं बन सकता।

क्रमशः अगले अंक में .....

www.thearyasamaj.org

धर्म रक्षक– गुरु गोविन्द सिंह

डॉ० श्रीलाल, सम्पादक, गीता स्वाध्याय

दिल्ली के शासक औरंगजेब के असहिष्णु तथा अत्याचारी आचरण से देश की जनता त्रस्त थी। हिन्दुओं पर अत्याचार कर उन्हें मुस्लिम मजहब स्वीकार कराना उसका उद्देश्य था। कश्मीर का ब्रह्मवृंद इस अत्याचार से मुक्ति दिलाने हेतु नवम् गुरु तेगबहादुर के पास पहुंचा। विचारमग्न पिता के पास बैठे नौ वर्षीय बालक गोविन्दराय से रहा नहीं गया। उसने पिता से चिन्ता का कारण पूछा। पिता ने कहा–"किसी महापुरुष के बलिदान बिना यह कार्य सिद्ध नहीं होगा। "बालक गोविन्दराय ने तुरन्त कहा– "आपसे बढ़कर वीर और गौरवशाली पुरुष कौन हो सकता है?" पुत्र के निर्भीक वचन सुनकर गुरुजी ने औरंगजेब को कहलाया– "गुरु तेगबहादुर का अमर बलिदान इतिहास बना। पिता को परामर्श देने वाला वह नौ वर्षीय बालक दसवें गुरु गोविन्दसिंह थे।

गुरु पद के अनुरूप तैयारी–

प्रथम गुरु नानकदेव से धर्म जागरण की परम्परा में अभूतपूर्व, किन्तु समय की मांग के अनुसार परिवर्तन करने वाले धर्मरक्षक योद्धा गुरु का जन्म पौष शुक्ल सप्तमी वि.सं. १७२३ (जनवरी १६६६ ई.) को पटना में माता गूजरीदेवी की कोख से हुआ था। मेधावी गोविन्दराय ने नौ वर्ष की आयु में गुरु पद संभालने के बाद तेरह वर्ष की आयु तक गुरु पद के अनुरूप आध्यात्मिक ज्ञान, त्याग तथा धर्मरक्षा हेतु शस्त्रविद्या का ज्ञान प्राप्त कर लिया। गुरु तेगबहादुर के अमर बलिदान तथा गुरु गोविन्दसिंह के शौर्य और पराक्रम से पूरे पंजाब तथा सिंध में धार्मिक जागृति की लहर चल गई। गुरुजी के लिए काबुल, कंधार, गजनी तथा बुखारा से उपहार आने लगे। गुरुजी ने अपने शिष्यों को निर्देश दिया कि उन्हें भेंट में अच्छी नस्ल के घोड़े तथा तलवार ही दी जाये।

खालसा पंथ का सृजन–

वर्ष १६९९ ई. वैशाखी पर्व पर आनंदपुरसाहिब में विशाल जनसभा में गुरुजी ने धर्मरक्षार्थ शीशदान करने के लिए शिष्यों को आह्वान किया। समाज के विभिन्न जाति–वर्गों से पांच बलिदानी आये। गुरुजी उन्हें अन्दर ले गये। रक्तरंजित तलवार देखकर जनसमूह को लगा कि गुरुजी ने पांचों की बलि चढ़ा दी, किन्तु कुछ देर बाद ये "पंचप्यारे" जीवित आ खड़े हुए। गुरुजी ने पांचों को अमृतपान कराया तथा उन्हें "खालसा" (पवित्र) की पदवी प्रदान की। गुरुजी ने प्रत्येक अनुयायी (सिक्ख) के लिए केश, कंघा, कच्छा, कड़ा एवं कृपाण (पांच 'क') तथा नाम के साथ 'सिंह' शब्द लगाने का आदेश दिया और घोषणा की– "सकल जगत में खालसा पंथ गाजे। जगे धर्म हिन्दू सकल भण्ड भाजे।।"

युद्ध कौशल–

गुरुजी का शौर्य देखकर आपपास के शासक भयभीत होने लगे। गुरुजी को औरंगजेब की विशाल

सेना तथा आसपास के गुलाम शासकों से अनेक युद्ध करने पड़े। दिसम्बर १७०४ में वजीर खाँ एवं जबदस्त खाँ की संयुक्त सेना ने युद्ध में १८ वर्षीय गुरुपुत्र अजीतसिंह को अभिमन्यु की तरह घेरकर मार दिया गया। छोटे भाई झूंझारसिंह (१६ वर्षीय) ने मुगलों के दांत खट्टे करते हुए वीरगति प्राप्त की। दो छोटे पुत्र जोरावरसिंह (६ वर्ष) एवं फतेहसिंह (६ वर्ष) बिछुड़ गये। मुसलमान बनने से मना करने के कारण सरहिन्द के नवाब ने इन धर्मवीर बालकों को जीवित दीवार में चुनवा दिया। गुरु गोविन्द सिंह पुत्रों के बलिदान का समाचार सुनकर बिना विचलित हुए बोले– " इन पुत्रन के कारणे वार दिये सुत चार। चार मुए तो क्या हुआ जीवित कई हजार।" गुरुजी का अपने शिष्यों के प्रति अपार स्नेह तथा विश्वास था। उन्होंने कहा था – "इन्हीं की कृपा से सजे हैं हम, नहीं तो मो से गरीब करोर परे।"

संन्यासी को योद्धा बनाया –

गुरु गोविन्दसिंह विश्राम के लिए नान्देड़ (महाराष्ट्र) गये। वहाँ एक वैरागी माधोदास गुरुजी के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि गुरुजी के 'बन्दा' बन गये। इस 'बन्दावैरागी' ने पंजाब जाकर सरहिन्द के नवाब की गर्दन काटकर गुरुपुत्रों के बलिदान का प्रतिशोध लिया। " बन्दावैरागी" ने अनके धर्मयुद्ध लड़े।

धर्म के लिए प्राण त्याग–

सरहिन्द नवाब के द्वारा नान्देड़ भेजे गये दो पठानों ने धोखे से गुरुजी पर आक्रमण कर दिया। 'सिंह' ने पलटकर तुरन्त उन्हें मार गिराया किन्तु तलवार के घातक घावों के कारण आध्यात्मिक गुरु, विद्वान, वीररस के कवि तथा धर्मवीर योद्धा का कार्तिक शुक्ल पंचमी विक्रम संवत् १७६५ में ४२ वर्ष की आयु में बलिदान हो गया। महाप्रयाण से पूर्व इन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा कि "गुरुगन्थ साहिब" ही अब तुम्हारे गुरु होंगे।

आजाद कौन है आज ?

आर्य नरसिंह सोनी

आज संस्कार विहीन समाज– निरंकुश समाज तैयार हो गया है और हो रहा है। इसी कारण सभी तरह के अपराधों में वृद्धि हो रही है। सबसे ज्यादा अपराध बलात्कार–रेप–गैंगरेप के हो रहे हैं। लगता है इनको किसी तरह का डर नहीं हैं न सरकार का न समाज का। हत्या तक कर देने से भी नहीं चूकते हैं। अभी दिल्ली में फिर निर्भया काण्ड होते–होते बचा है। पुलिस की सूझ–बूझ से। चाहे किसका अपहरण करना–बलात्कार करना, हत्या करना आदि अपराध करने में वे अपने को आजाद समझते हैं। सरकार है कि तत्काल दण्ड व कठोर दण्ड व्यवस्था न कर उनका हौसला बढ़ा रही है। ऐसे अपराधियों को रोकने के लिए नपुंसक बनाना या प्राण दण्ड की व्यवस्था होना ही एक मात्र उपाय हो सकता है। सरकार इसको रोकने के लिए कठोर निर्णय लें। अगर सरकार औरतों व बच्चियों व अन्यों की सुरक्षा व जान–माल व आबरू की हिफाजत नहीं कर सकती है, तो उसे सत्ता में बने रहने का अधिकार नहीं है। वेद और मनु–स्मृति का ऐसा ही आदेश है। इसलिए सरकार को आम जनता के हितों की पूरी–पूरी जिम्मेदारी समझकर व्यवस्था करनी चाहिए।

दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च भिद्येरन्सर्वसेतवः।
सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्यण्डस्य विभ्रभात्।।

मनु स्मृति

मातृवत् परदारेषु पर द्रव्याणि लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभुतानि यः पश्यति स पश्यति।।

चाणक्य नीति

यानि जो मनुष्य पर स्त्री को माता के समान, पराए धन को मिट्टी के समान और समस्त प्राणियों को अपने आत्मा के समान देखता है। वही ठीक–ठीक देखता है और गलत कामों से बचा रह सकता है। ऐसे सन्मार्ग दिखाने वाले विचारों का प्रचार होना बहुत जरूरी है। तभी अपराधों में कमी आयेगी।

मो० : ६२५२६१८२६४

www.thearyasamaj.org

संस्कृत वाड्मयं के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण परक अनुसन्धान

सोमेन्द्र सिंह ''रिसर्च स्कॉलर

यात्येकतोऽस्त शिखरं पतिरोषधीनां
माविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।।

।।४/२ अभिज्ञान शाकुन्तलम्।।

प्रोफेसर माइकल पोर्टर का कहना है कि ''सम्भावना पूर्ण कारण पैदा किए जाते है, विरासत में नहीं मिलते। अर्थात किसी भी समस्या का समाधान खोजने की आवश्यता पड़ती है। वह अपने आप नहीं सुलझती। वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण है। जिससे भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व त्रस्त है। पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन संपूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है। जो मानव जगत को परावृत करती है। हमारे चारों ओर जो विराट प्राकृतिक परिवेश व्याप्त है। उसे ही हम पर्यावरण कहते है। परस्परावंलबी संबंध का नाम पर्यावरण है। हमारे चारों ओर जो भी वस्तुएँ, परिस्थितियां एवं शक्तियां विद्यमान है, वे सब हमारे क्रियाकलापों को प्रभावित करती है। और उसके लिए एक दायरा सुनिश्चित करती हैं इसी दायरे को हम पर्यावरण कहते है। यह दायरा व्यक्ति, गाँव, नगर, प्रदेश, महाद्वीप, विश्व, अथवा सम्पूर्ण सौरमण्डल या ब्रह्माण्ड हो सकता है। सर्वप्रथम डा० रघुवीर ने तकनीकी शब्द कोष निर्माण के समय ''इन्वायरमेंट (फ्रेंच भौतिक शब्द) के लिए पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया था। वे ही इसके प्रथम ''शब्द प्रयोक्ता'' है। वास्तव में पर्यावरण या इन्वायरमेंट शब्द अत्यधिक प्राचीन शब्द नहीं है। जर्मन जीव वैज्ञानिक अर्नेस्ट हीकल द्वारा ''इकोलॉजी'' शब्द का प्रयोग सनृ १८६९ में किया गया जो ग्रीक भाषा के आईकोस (ग्रह या वास स्थान) शब्द से उद्धत है। यही शब्द परिस्थितिकी के अंग्रेजी पर्याय के रूप में इन्वारमेंट शब्द से प्रचलित हुआ। इन्वायरमेंट शब्द ऐसी क्रिया जो घेरने के भाव को सूचित करने के संदर्भ में किया जाता है। विभिन्न कोशों में इसके विभिन्न अर्थ दिए गए है। जैसे वतावरण उपाधि, परिसर, परिस्थति, प्रभाव, प्रतिवेश, परिवर्त, तथा वायुमण्डल, वातावरण और परिवेश। संस्कृत वाड्मय में जहां मानव जाति के लिए आयुर्वेद, धर्मनीति, राजनीति, वास्तुशास्त्र, जयोतिष, आदि का विशद् वर्णन है। वही पर पर्यावरण को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसीलिए वेदकालीन मनीषियों ने द्युलोक से लेकर व्यक्ति तक समस्त परिवेश के लिए शांति की प्रार्थना की है। वैदिक काल से आज तक चिंतकों और मनीषियों द्वारा समय–समय पर पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता को अभिव्यक्त कर मानव जाति को सचेष्ट करने के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह के प्रति अपनी चिंता को अभिव्यक्त कर मानव जाति को सचेष्ट करने के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया गया हैं पर्यावरण का स्वच्छ एवं संतुलित होना मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पश्चात्य सभ्यता को यह तथ्य बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में समझ में आया है। जबकि भारतीय मनीषियों ने इसे वैदिक काल में ही अनुभूत कर लिया था। हमारे ऋषि मुनि जानते थे कि पृथ्वी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष, तथा वायु इन पंचतत्वों से ही मानव शरीर निर्मित है।

''पंचस्वन्तु पुरुष आविवेशतान्मन्तः पुरुषे आर्पेतानि''[६] २३–२५

उन्हें इस तथ्य का भाव था कि यदि इन पंचतत्वों में से एक भी दूषित हो गया तो उसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर पड़ना अवश्यम्भावी है।

इसीलिए उन्होंने इसके संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रत्येक धार्मिक कृत्य करते समय लोगों से प्रकृति के समस्त अंगों को साम्यावस्था में बनाए रखने की शपथ दिलाने का प्रावधान किया था। जो कि आज भी प्रचलित है।

द्योः शन्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः, शान्तिरोषद्ययः शान्ति।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्वशान्ति देव शान्तिः सामा शान्तिरोधि।।[७] ३६.१७।।

यजुर्वेद का ऋषि सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना करते हुए मानव जीवन तथा प्राकृतिक जीवन में अनुस्यूत एकता का दर्शन बहुत पहले कर चुका था। ऋग्वेद का नदी सूक्त एवं पृथिवी सूक्त तथा अथर्ववेद का अरण्यानी सूक्त क्रमशः नदियों, पृथ्वी एवं वनस्पतियों के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना का संदेश देते है। भारतीय दृष्टि चिरकाल से सम्पूर्ण प्राणियों एवं वनस्पतियों के कल्याण की आकांक्षा रखती आई है। ''यद्पिण्डे तद्ब्रह्मण्डे'' सूक्ति पुरुष तथा प्रकृति के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध की विज्ञान सम्मत अवधारणा को बताती है। स्वच्छ जल एवं स्वच्छ परिवेश किसी भी सामाजिक वातावरण के पल्लवन एवं विकसन की अपरिहार्य आवश्यकता हैं जीव–जन्तुओं हेतु अनुकूल परिस्थितियों में ही जीव–जन्तुओं का समाज पुष्पित–पल्लवित होता है। अतः सामाजिक विकास में पर्यावरण तथा जल संरक्षण की अनिवार्यता को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

संस्कृत वाड्मय में पर्यावरण पर विशेष चर्चा की गयी हैं अथर्ववेद में कहा गया है कि अग्नि (यज्ञाग्नि) से धूम उत्पन्न होता है। धूम से बादल बनते हैं और बादल से वर्षा होती है। वेदों में यज्ञ का अर्थ ''प्राकृतिक चक्र को सन्तुलित करने की प्रक्रिया'' कहा गया है। वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि यज्ञ द्वारा वातावरण में ऑक्सीजन तथा कार्बनडाईऑक्साईड का सही सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। अतः यह तथ्य भी विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरा है। वेदों तथा वेदांगों में अनेक स्थलों पर यज्ञ द्वारा वर्षा के उदाहरण मिलते है। यास्कीय निघण्टु में वन का अर्थ जल तथा सूर्य किरण एवं पति का अर्थ स्वामी माना गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक ऋषि इस विज्ञान सम्मत धारणा से अवगत थे कि वन ही अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि से उनकी रक्षा कर सकते है। इसी लिए ऋग्वेद में वनस्पतियों को लगाकर वन्य क्षेत्र को बढ़ाने की बात कही गयी है। सम्भवतः इसी कारण से उन्होंने वन्य क्षेत्र को ''अरण्य'' अर्थात रण से मुक्त या शान्ति क्षेत्र घोषित किया होगा। ताकि वनस्पतियों को युद्ध की विभीषिका से नष्ट होने से बचाया जा सके।

सृष्टि की उत्पत्ति और जगत का विकास ही पर्यावरण प्रादुर्भाव है। सृष्टि का जो प्रयोजन है वही पर्यावरण का भी है। जीवन और पर्यावरण का अन्योन्य संबंध है। इसीलिए आदिकाल से मानव पर्यावरण के प्रति जागरूक रहा हैं। ताकि मानव दीर्घायुष्य, सुस्वास्थ्य, जीवन शक्ति, पशु, कीर्ति, धन एवं विज्ञान को उपलब्ध हो सके। यही कामना अथर्ववेद का ऋषि ''आयुः प्राणं प्रणां पशु व ''शत जीव शरदो करता है। ऋग्वेद में ऋषि'' शतां जीवतु शरदः.... तथा यजुर्वेद में ऋषि ''शतिमिन्नुशरदो अति.... तथा वह ऋषि का आशीर्वाद पाता है कि हे मनुष्य! बढ़ता हुआ तू सौ शरद ऋतु और सौ बसंत तक जीवित रहे। इंद्र (विद्युत) अग्नि, सविता (सूर्य), बृहस्पति (संकल्प शक्ति) और हवन (यज्ञ) तुझे सौ वर्ष तक आयुष्य प्रदान करें – वैदिक साहित्य में प्राकृतिक पदार्थों से कल्याण की कामना को स्वस्ति कहा गया है। इस पर आचार्य सायण एवं नैरूक्त चिंतन है कि अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति ''योग'' है एवं प्राप्ति का संरक्षण ''क्षेम'' है। पर्यावरण के संतुलन में वृक्षों के महान योगदान एवं भूमिका को स्वीकार करते हुए ऋषि मुनियों ने बहुत चिंतन किया है। मत्स्य पुराण में उनके महत्व एवं महात्मय को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि दस कुंओं के बराबर एक बावड़ी होती है। दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र हैं और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

यदि हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो हमें प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उपयोग संस्कृत वाड्मय के दिये निर्देशानुसार ही करना होगा। पर्यावरण के विषय में महर्षि यास्क ने जो कहा है वह सर्वमान्य हैं यास्क ने अपने निरुक्त में वस्तु या भाव के छह विकार गिनाए हैं। उनमें पर्यावरण के सम्बन्ध में अस्ति या सत्ता शब्द चिंतनीय है। इसकी व्याख्या में वे कहते हैं कि ''कोई वस्तु तभी तक अपनी सत्ता बनाए रख सकती है जब तक वह स्वयं को धारण करने में समर्थ हैं जब उसमें बाहर हस्तद्वीप अधिक होता है अथवा उसकी नैसर्गिक संरचना विकृति होती है तो उसकी आत्म धारणा शक्ति नष्ट हो जाती है। यही उसका प्रदूषण है''। वस्तु के निर्माण का जो अनुपात है वह स्थिति रहना चाहिए। अनुपात भंग हुआ और वस्तु में स्वास्थ्य का विनिष्ट होना ही प्रदूषण है। संस्कृत वाड्मय में पर्यावरण सुरक्षा हेतु स्पष्ट संदेश दिया गया है। अथर्ववेद में भूमि की हरेपन से रक्षा करने का जो संदेश है उसके द्वारा दो बाते कही गयी है।

शेष पृष्ठ -७ पर

www.thearyasamaj.org

दया के मायने

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

हम सभी जीवन में दूसरों से दया की अपेक्षा करते हैं। परन्तु क्या हम जैसा व्यवहार दूसरों से अपने लिए अपेक्षित करते हैं वैसा व्यवहार हम स्वयं दूसरों के साथ करते हैं। यदि नहीं तो शायद हमारी अपेक्षा बेमानी है। वैसे भी महर्षि दयानन्द ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में हम मनुष्यों को सभी से स्वआत्मवत यथायोग्य व्यवहार करने का निर्देश दिया है। यदि हम दूसरों से स्वआत्मवत व्यवहार नहीं करते तो हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं है। हम दूसरों से दया की अपेक्षा करते हैं तो हमारा भी कर्तव्य बन जाता है कि हम भी दीनदुखियों, निर्धनों, असहायों, निर्बल धर्मात्माओं पर दया दिखायें और उनकी हर संभव सहायता करें। महर्षि दयानन्द ने संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बतलाया है और यदि हम इस मुख्य उद्देश्य को पाना चाहते हैं तो हमें दूसरों पर दया करना सीखना पड़ेगा। कहीं ऐसा तो नहीं कि मांगते समय तो हम आपने हाथ खड़े कर लेते हैं पर दया करनी पड़े तो वही खड़े हाथ अपने कानों पर रख लेते हैं कि हमें किसी की करुण पुकार निर्बल की चीत्कार सुनाई ही ना पड़े। स्पष्ट है यदि हम किसी पर दया नहीं करते हम भी किसी की दया के अधिकारी नहीं है।

ईश्वर की स्तुति करते समय जब हम ईश्वर के गुणों की चर्चा करते हैं तो हम ईश्वर को दयालु भी कहते हैं। स्तुति करते समय जब हम ईश्वर के गुणों का बखान करते हैं तो उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का भी प्रयास करें। तभी ईश्वर स्तुति का लाभ है। अब ईश्वर को दयालु जानते मानते हुए स्तुति करते समय चिंतन करें कि हम अपने जीवन में दूसरों पर कितनी दया उदारता दिखाते हैं और परोपकार के कार्य करते हैं। महर्षि दयानन्द ने तो आर्य समाज के नियमों में स्पष्ट कहा "केवल अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।" सबकी उन्नति में अपनी उन्नति का यह भाव केवल दूसरों पर दया करने से ही संभव है। महर्षि दयानन्द ने तो अपने जीवन में खुद को विष देने वाले प्राणहन्ता पर भी दया दिखलाते हुए दिया। जब उन्हें विष देने वाले को पकड़कर उनके सामने लाया गया तो उन्होंने कहा "इसे छोड़ दो, मैं संसार को कैद करवाने नहीं आया अपितु मुक्त करवाने आया हूँ।" तुलसीदास जी ने भी कहा है–

परहित सरस धर्म नहिं भाई। नहिं पर पीड़ा सम अधिमाई।।

अर्थात दूसरों के साथ दयालुता के व्यवहार से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा देने के समान कोई पाप नहीं है।

दया मनुष्य जीवन की सुगन्धि है इससे हम सभी को अपना जीवन सुवासित कर लेना चाहिए। जो दया से प्रेरित होकर सेवा करते है उन्हें निश्चित सुख की प्राप्ति होती है। वैसे भी निष्काम भाव से किए गए परोपकार दया के यज्ञीप कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कार्यों की श्रेणी में रखा गया है। दयालुता धर्म की जननी है यह वह जंजीर है जिसमें इंसानियत ने इंसानों को बांध रखा है। दयालुता के व्यवहार से हम एक दूसरे को प्रेम बंधन में बांध लेते हैं। दयालुता से मनुष्य को प्रसिद्धि मिलती है महात्मा गांधी ने सही कहा दुनिया का अस्तित्व शास्त्रबल पर नहीं अपितु सत्य दया और आत्मबल पर है। किसी पर भी विजय पाना दया से सम्भव है।

परन्तु एक प्रश्न उठता है कि क्या हमें क्रूर आततायी पर भी दया दिखलानी चाहिए या फिर न्याय करते हुए दण्ड देना चाहिए। ईश्वर के स्वरूप में न्याय और दया दोनों आते हैं। ईश्वरीय न्याय में भी उनकी दया है। क्रूर आततायी को दण्ड देकर हम पूरे समाज को उसके अपराधों से बचाकर दया दिखाते हैं ओर साथ ही इस दण्ड से उसे उसकी गलती का अहसास करवाते हुए सही मार्ग पर आने की प्रेरणा देते हैं। हम कह सकते हैं कि शुद्धि न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए। न्याय का विरोध करने वाली दया, दया नहीं क्रूरता है। आततायी, अपराधी पर बिना न्याय की दया स्वआत्मवत, यथायोग्य व्यवहार के भी विपरीत है।

मो० : ०१७२४००१८६५, ०६४६७६०८६८६

व्यंग्य :

फुटपाथों पर गाड़ियाँ पार्क करने वालो सावधान! फुटपाथों पर धंध चालू आहे

–डा० सीताराम गुप्ता

सड़कों पर ट्रैफिक की समस्याओं का समाधान करने के लिए बनी कमिटी ने सिफारिश की है कि फुटपाथ पर गाड़ियाँ पार्क करने पर सज़ा मिलनी चाहिए। कितनी सही बात कही है कमिटी ने! वास्तव में ये कमिटियाँ ही है जो सही बात कह सकती हैं। फुटपाथ क्या गाड़ियाँ पार्क करने पर सज़ा मिलनी चाहिए और बराबर मिलनी चाहिए। अरे! फुटपाथ क्या गाड़ियाँ पार्क करने के लिए होते हैं? यदि पुटपाथों पर इसी तरह से गाड़ियाँ खड़ी की जाती रहीं तो उन बेचारों का क्या होगा जो शहरों के मेहमान हैं, शहरों के फुटपाथों पर ही अपनी गृहस्थी चलाते हैं? क्या सरकार उनके लिए घर बनवा कर दे देगी या बाज़ार बनवाकर उन्हें दुकानें अलॉट कर देगी? नहीं न? वैसे इसकी जरूरत भी क्या है? जब फुटपाथों से काम चल ही रहा है तो फिर चिंता की क्या बात है? तो फिर फुटपाथ पर गाड़ियाँ खड़ी करने वालों को सज़ा मिलनी ही चाहिए और खूब मिलनी चाहिए।

बेशक देश व दिल्ली में अच्छे से अच्छे होटेल्स व ईटिंग आउटलेट्स हैं लेकिन चाट–पापड़ी, गोलगप्पे, मटर–कुलचे, छोले–भटूरे, अमृतसरी नान, मोमो–शोमो आदि खाने और खिलाने का जो मज़ा फुटपाथ पर है और कही नहीं। इसीलिए अग्रवाल और बीकानेर की मिठाइयों की बड़ी–बड़ी दुकानें भी मिठाइयाँ तो अंदर बेचती हैं लेकिन चाट–पापड़ी, दही–भल्ले, गोलगप्पे, मटर–कुलचे, छोले–भटूरे, अमृतसरी नान अथवा मोमो–शोमो के काउण्टर फुटपाथों पर ही सजाती हैं। अब गुटखा या पान खाकर पीक थूकनी हो तो क्या मॉल में जाइएगा अथवा होटेल में? स्ट्रीट फूड़ के लिए भी तो ये फुटपाथ ही हैं न। नींबूपानी से लेकर नमकीन के साथ लिए जाने वाले पेय आदि ठीक दाम में कहीं मिल सकते हैं तो वो हमारे फुटपाथ ही तो हैं। रातें रंगीन करने वालों के लिए ये फुटपाथ ही हैं जो सब कुछ उपलब्ध करवाने में सक्षम हैं। खाने का माल खाओ और ले जाने का ले जाओ। क्या नहीं होता हमारे फुटपाथों पर? क्या नहीं बिकता हमारे फुटपाथों पर? फुटपाथों पर काम करने वालों के भी मज़े और यहाँ पर काम करने में सहयोग करने वालों की भी पौ बारह।

वैसे तो पूरे देश में बड़े–बड़े शहरों व कस्बों में घूमने व खरीदारी करने के लिए एक से बढ़कर एक शानदार मॉल्स व मार्केट्स हैं लेकिन पंचर बनवाने से लेकर व्हील बैलेंसिंग तक और साइकिल से लेकर ट्रक, मेट्रो व हवाई जहाज़ तक के नए–पुराने टायर खरीदने तक सब काम फुटपाथ पर ही तो संभव है। लोग यदि फुटपाथें पर गाड़ियाँ पार्क करने लगेंगे तो हमारे शहरों में दूर दराज से रोजी–रोटी की तलाश में जो लोग आते हैं वो बेचारे कहाँ तो पान बीड़ी–सिगरेट की दुकान खोलेंगे और कहाँ गुटखे व पानमसाले के पाउच की लड़ियाँ लटकाएँगे। फुटपाथ के साथ कोई दो बाई दो गज की जगह मिल जाए तो वहाँ फुटपाथ पर चार टेबुल और चौबीस कुर्सियाँ डालकर एक मीडियम किस्म का ढ़ाबा आराम से चलाया जा सकता है। यदि गाड़ियाँ पार्क करने के कारण फुटपाथ ही नहीं रहे तो कहाँ तो ये बेचारे ढाबेवाले जाएँगे और कहाँ बेचारे इन ढाबों पर आने वाले जाएँगे। मुझे तो इन ढाबों पर खाना खाते लोगों के बीच से पैदल यात्रियों का गुज़रना भी अच्छा नहीं लगता गाड़ियों की पार्किंग तो बहुत दूर की बात है।

फुटपाथ ही तो हैं जो हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान हैं। हमारे आर्थिक विकास की जान हैं। दिल्ली हो मुम्बई हो या दूसरे शहर–कस्बे हों सबके फुटपाथ ही देश की शान हैं। जितने भी बॉलीबुड के महान कलाकार हैं इन्ही फुटपाथों ने पहले पहल उन्हें शरण दी। इन्हीं के साथ बसी झोंपड़पट्टियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के भाई लोग दिए। यदि मुम्बई में फुटपाथ न होते तो आज देश में न महान कलाकार होते और न हॉलीवुड तक हमारे कलाकारों की कला का डंका बजता और न ही तस्करी के मामले में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ही हम आत्मनिर्भर होते। दिल्ली इस मामले में पिछड़ा हुआ है। थोड़ा नहीं काफी पिछड़ा हुआ है। दिल्ली के फुटपाथों ने मुम्बई जैसा कोई कमाल नहीं कर दिखाया इसलिए दिल्ली के फुटपाथों के संरक्षण व विकास की बेहद जरूरत हैं। फुटपाथ संस्कृति को बचाकर ही हम देश को आगे ले जा सकते हैं। देश के सर्वांगीण विकास के लिए यदि कोई बेहद

शेष पृष्ठ -७ पर

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ १ का शेष

आर्यसमाज के वेदसम्मत 10 नियमों के .....

सामान्य अधिकारों तक से वंचित किया गया। उनके प्रति ऐसे कठोर विधान भी किये गये जो निन्दनीय थे। अतः इन सभी अन्धविश्वासें व मिथ्या परम्पराओं से समाज कमजोर होता रहा और परिणामतः मुस्लिमों व उसके बाद अंग्रेजों का गुलाम हो गया। आज भी अज्ञान व अन्धविश्वासों की यह बुराई समाप्त व कम होने के स्थान पर वृद्धि को ही प्राप्त हो रही है जिससे देश के भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह लग गया है।

सन् १८६३ में मथुरा में प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती से अपना अध्ययन पूरा कर ऋषि दयानन्द (१८२५–१८८३) कार्यक्षेत्र में उतरते हैं। इससे पूर्व वह प्रायः सारे देश का भ्रमण कर देश में अविद्या के विविध हानिकारक प्रभावों का प्रत्यक्ष अनुभव कर चुके थे। अध्ययन की समाप्ति पर स्वामी दयानन्द ने मथुरा से आगरा जाकर धर्म प्रचार आरम्भ कर दिया। आगरा में रहते हुए उन्होंने वेदों की आवश्यकता अनुभव की और उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न किये। वेदों की प्राप्ति के लिए उन्होंने ग्वालियर, कैरोली, जयपुर आदि की यात्रा की। अनुमान है कि उन्हें कैरोली में वेद प्राप्त हुए और वहां पर्याप्त समय रुक कर उन्होंने वेदों का पर्यालोचन, सूक्ष्म अध्ययन किया और उससे उन्हें जो बोध हुआ उसका मंथन कर युक्ति व तर्क की सहायता से धार्मिक व सामाजिक विषयों से संबंधित सत्य व असत्य मान्यताओं का निर्धारण किया। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार के समस्त साहित्य में वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और धर्म विषयक सभी मान्यताओं की परीक्षा व उनके निर्धारण में यही स्वतः प्रमाण व परम प्रमाण है। इसके बाद समय–समय पर उन्होंने ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना की सन्ध्या की पुस्तक, भागवत पुराण की मिथ्या मान्यताओं का खण्डन, समस्त वैदिक सिद्धान्तों, आर्यावर्त्तीय एवं विदेशी मतों की समीक्षाओं से युक्त विश्व के अद्वितीय ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना की। स्वामी जी के इन लेखन कार्यों व उपदेशों से प्रभावित होकर समाज के निष्पक्ष एवं बुद्धिमान प्रगतिशील लोगों ने अपने पूर्व मतों को छोड़कर वेदमत को स्वीकार किया। सन् १८६९ में आपने काशी में मूर्तिपूजा पर वहाँ के दिग्गज लगभग ३० विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ किया। इस शास्त्रार्थ में प्रतिपक्षी विद्वान स्वामी जी के मूर्तिपूजा विषयक प्रश्नों के वेद से प्रमाण प्रस्तुत न कर पाये जिससे मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध नहीं किया जा सका। वेदों में मूर्तिपूजा का विधान न होने से मूर्तिपूजा वेद सम्मत सिद्ध नहीं हुई। सन् १८७५ तक स्वामी दयानन्द जी देश के अनेक भागों व प्रान्तों में घूम–घूम कर वेदोपदेश आदि के द्वारा प्रचार व जागृति उत्पन्न करते रहे और यथावसर अन्य मतों के विद्वानों से शास्त्रार्थ, शंका समाधान व शास्त्र चर्चा भी करते रहे। उनके द्वारा नये–नये ग्रन्थों का लेखन भी जारी रहा। आपके सत्यार्थप्रकाश से इतर तीन प्रमुख ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका', 'संस्कार विधि' एवं 'आर्याविविनय' हैं। इन कार्यों को सम्पन्न करने के बाद आपने चार वेदों का सरल व सुबोध संस्कृत–हिन्दी भाष्य का कार्य भी आरम्भ किया। मृत्यु के समय तक आपने यजुर्वेद का भाष्य पूरा कर प्रकाशित करा दिया था। १० मण्डलों वाले ऋग्वेद का भाष्य जारी था जिसमें से प्रथम ६ मण्डलों का पूर्ण एवं सातवें मण्डल का आंशिक भाष्य स्वामी जी द्वारा पूर्ण हो सका। इन सभी ग्रन्थों के अतिरिक्त स्वामी जी ने अनेक लघु ग्रन्थ भी लिखे हैं जिनमें से कुछ हैं पंचमहायज्ञ विधि, चतुर्वेद विषय सूची, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, संक्षिप्त आत्मकथा, संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि अनेक ग्रन्थ। स्वामी जी ने संस्कृत व्याकरण के भी अनके ग्रन्थों की रचना की है।

मुम्बई में स्वामी जी के प्रवास के अनन्तर आपके अनेक भक्तों ने आपसे वेदों का प्रचार–प्रसार करने के उद्देश्य से आर्यों का देश स्तर का एक संगठन बनाने हेतु आर्यसाज की स्थापना करने का अनुग्रह किया। स्वामी जी ने इस पर विचार किया और कुछ चेतावनी देते हुए इसकी अनुमति दी और १० अप्रैल, १८७५ को मुम्बई के गिरिगांव मुहल्ले में आर्यसमाज की स्थापना सम्पन्न हो गई। आर्यसमाज की स्थापना के अनन्तर इसके उद्देश्य व नियम निर्धारित हुए जिनका बाद में संशोधन कर इनकी संख्या १० निर्धारित हुइ। यह नियम हैं, १. सब सत्य विद्यया और जो पदार्थ विद्यया से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है। २. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्र्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है। ३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। ४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। सब काम धार्मनुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। ७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बरतना चाहिए। ८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। ९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के जो उपर्युक्त १० नियम बनायें हैं वह संसार में विद्यमान सभी समाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सर्वोत्तम एवं स्वर्णिम नियम हैं। स्वामी दयानन्द जी के जीवन में इन सभी नियमों का जीवन्त आदर्श रूप देखने को मिलता है प्रथम नियम की बात करें तो यह विज्ञान से सम्बन्धित है। ईश्वर सभी सत्य विद्याओ का आदि मूल है, अन्य कोई सत्ता नहीं। इससे यह भी ज्ञात होता है कि यह संसार अभाव से और न बिना किसी कर्ता के उत्पन्न हुआ है। ऋषि दयानन्द द्वारा निर्मित यह नियम विज्ञान की कसौटी पर भी सत्य सिद्ध होता है। हमें नहीं लगता की कोई मनुष्य या वैज्ञानिक किसी युक्ति व तर्क से इसे अस्वीकार कर सकता है। अस्वीकार करने का अर्थ ईश्वर को न मानना और फिर सृष्टि को बिना कर्ता के मानना होगा जो कि असम्भव होने से अस्वीकार्य है। ईश्वर ही इस सृष्टि का निमित्त कारण है। ऋषि दयानन्द ने इस इस नियम को बनाया भी और यह उनके जीवन में उनके उपदेशों व लेखन में यह नियम सम्पूर्णता में स्वीकार्य दृष्टि गोचर हुआ है। इसका उदाहरण उनका ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास और समर्पण का होना भी रहा है। दूसरे नियम में ईश्वर के जो गुण, कर्म, स्वभाव आदि बताये व कहे हैं, उन्हें स्वामी दयानन्द जी ने अपने सभी ग्रन्थों में वेद प्रमाणों, तर्क व युक्तियों से सत्य सिद्ध किया है। उनके जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्होंने इस नियम में विश्वास रखा व उसके अनुरूप ही व्यवहार भी किया।

तीसरा नियम वेद के संबंध में है। स्वामी जी ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने सहित उसे सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया व सिद्ध किया है। स्वामी दयानन्द की पुस्तक ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका इस तीसरे नियम को अनेकानेक उदाहरणों व विविध विषयों के वर्णनों से सत्य सिद्ध करती है। वैदिक विज्ञान विषय पर पं० कपिल देव द्विवेदी जी ने पुस्तक लिख कर इस नियम की पुष्टि की है। आर्य विद्वानों के प्रायः सभी ग्रन्थ इसका समर्थन करते हैं। स्वामी दयानन्द का जीवन भी इस नियम के पालन व इसके प्रचार के लिए ही समर्पित था। आज भी यह सिद्धान्त अकाट्य होने से स्वामी दयानन्द दिग्विजयी है। चौथे नियम से दसवें नियम तक के सात नियम सभी मनुष्यों व सभी मतों–सम्प्रदायों द्वारा स्वीकार्य नियम हैं। यह नियम एक प्रकार से वैश्विक सत्य अर्थात् यूनिवर्सल ट्रूथ हैं। इनका कोई विरोध नहीं कर सकता। स्वामी जी का जीवन इन नियमों की शिक्षाओं व भावनाओं से ओत–प्रोत था जिसका अनुभव हर पाठक करता है जिसने उनके सभी जीवन चरित व ग्रन्थों को पढ़ा है। अतः स्वामी दयानन्द आर्यसमाज के दस स्वर्णिम नियमों के आदर्श धारणकर्ता एवं पालक रहे हैं। जो मनुष्य वा व्यक्ति अपने जीवन को सफल करना चाहते हैं उन्हें उनका अनुयायी व उन जैसा ईश्वर व वेद भक्त बनना ही होगा। नहीं बनेंगे तो जन्म–मरण के चक्र से मुक्त नहीं हो सकते। उनका वेद प्रचार और आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य लोगों को जन्म–मरण के चक्र व दुःखों से मुक्ति दिलाना था। यह बात उनके अनुयायी भावनाओं में बह कर नहीं अपितु दर्शन शास्त्र के सिद्धान्तों का मनन कर स्वीकार करते हैं। संसार में केवल वेद ज्ञान ही पूर्ण सत्य एवं मुक्ति का मार्ग हैं। महर्षि दयानन्द ने इस मार्ग पर चलकर स्वयं आदर्श प्रस्तुत किया है और अपने प्राणों की आहुति दी है। आईये! उनके जीवन व कार्यों का मनन करें सत्य को स्वीकार करें। इति ओ३म शम्।

मो० : ०९४१२६८५१२१

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ ४ का शेष

संस्कृत वाड्मयं के परिप्रेक्ष्य में .....

प्रथम तो यह कि पर्यावरण तथा प्राणियों की रक्षा पृथ्वी में हरियाली के माध्यम से होती है। द्वितीय यह कि भूमि भी पेड़–पौधों की हरितिमा से सुरक्षित रहती है। इसलिए भूमि को प्रदूषण से बचाए रखने के लिए न केवल हरियाली के प्रभाव को समझना होगा अपितु सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाकर धरती पर हरियाली का हर संभव प्रयास करना होगा। यही कारण है कि हमारे चिंतक मनीषियों ने वृक्षों एवं वनों की रक्षा करने वालों का विशेष सम्मान करने तथा उन्हें सतत् अन्न–धन देते रहने का संदेश दिया है। संस्कृत वाड्मय में पर्यावरण की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए संस्कृत लेखकों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति प्रेम को प्रदर्शित किया है। उन्होंने अपने भावों को पात्रों के माध्यम से भाई–बहन जैसा प्रेम व माता जैसा वात्सल्य दिखाया है। महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति का वर्णन करते हुए उसकी नायिका शकुन्तला को प्रकृति की पुत्री के समान दिखाया है। जिसकी गोद में पलकर शकुन्तला बड़ी हुई है। पुत्री की विदाई के समय प्रकृति का रूप एक माता के समान दिखाया है।

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः [१६]
४/१२ अभिज्ञान शाकुन्तलम्।

महाकवि कालिदास द्वारा प्राणियों के प्रति चेतन मानव की आत्मीयता का इससे सुन्दर उदाहरण और क्या हो सकता है।

धूमज्योतिः सलिलमरुता सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् ग्रह्मकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृति कृपणाश्चेतनायेतनेषु।। पूर्वमेघ५।। [१७]

इतना ही नहीं पुत्री को पति के घर जाना है इसलिए उसे आभूषण की आवश्यकता पड़ेगी। यही सोचते हुए प्रकृति माता ने अपनी पुत्री शकुन्तला को वह सब उपलब्ध कराया जो दुर्लभ था।

संस्कृत वाड्मय में पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर विशद् वर्णन है। कुछ सराहनीय प्रयास इस और किये जा रहे है जैसे उत्तराखण्ड में १३० इन्फैट्री बटालियन ने ५ जून यानी विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर ''हरेला वीम'' मनाते हुए महज १६ मिनट में १ लाख से अध्किा पौधे रोपे गये हैं। जिसके बाद बटालियन की इस उपलब्धि को लिम्बा बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज किया गया है। इसी प्रकार राजस्थान के पिपलांत्री गांव में बेटी पैदा होने पर गांव में हर साल १११ पौधे लगाते हैं।

आज विश्व पटल पर पर्यावरण एक बडी समस्या बनकर उभरा है। विश्व के सभी देश कार्बन उत्सर्जन को लेकर चिन्तित है। विश्व के सभी देश इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वर्तमान में ६५ देश कार्बन उत्सर्जन के प्रति अपनी रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्रसंघ को सौंप चुके हैं। भारत ने भी ६६ वे देश के रूप में अपनी पर्यावरण व कार्बन उत्सर्जन रिपोर्ट यू०एन०ओ० को सौंप दी है। आज यह बड़ी खुशी की बात है की सम्पूर्ण देश पर्यावरण को लेकर सजग है। तथा इसके सुधार के लिए सतत् प्रयासरत् हैं। संस्कृत वाड्मय के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण परक अनुसन्धान की नितान्त आवश्यकता है। संस्कृत वाड्मय के सभी ग्रन्थों में पर्यावरण के साथ–साथ देश की भौगोलिक स्थिति का भी वर्णन किया गया है। अतः हमें इस पर गहनता से विचार करना होगा तथा संस्कृत वाड्मय की सहायता से पर्यावरणा में सुधार के लिए सतत् प्रयास करने होंगे।

ऋग्वेद परायण महायज्ञ सम्पन्न

- सुभाष चन्द्र आर्य

आर्य समजा टान्डा अफजल मुराबाद के तत्ववाधन में ऋग्वेद परायण महायज्ञ का आयोजन ३१ दिसम्बर २०१६ से ८ जनवरी २०१७ तक किया गया यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में श्री जगदीश कुमार, दिनेश जी थे। महायज्ञ के अन्तिम दिवस पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद से सभी सदस्य व श्री ज्ञानेन्द्र गाँधी जी और अन्य राजनेताओं एवं सम्भ्रान्त नागरिकों ने महायज्ञ में आहुति देकर अपने पुण्य अर्जित किये। महायज्ञ के आयोजक श्री सुबोध कुमार आर्य व संचालक सुभाष चन्द्र आर्य जी थे।

मो० : ६५५७५४५७७३

पृष्ठ ५ का शेष

फुटपाथों पर गाड़ियाँ पार्क करने .....

ज़रूरी चीज़ है तो वो हैं हमारे फुटपाथ। इन पर गाड़ियों की पार्किंग करने वालों को सज़ा मिलनी ही चाहिए।

मैं तो कहता हूँ कि फुटपाथ सिर्फ लोगों के रहने और कमाने–खाने के लिए रिजर्व कर दिए जाने चाहिए। आप कहेंगे कि पैदल यात्री कहाँ चलेंगे? तो मेरा जवाब है कि पैदल यात्री सड़कों पर ही चलें। अब आप कहेंगे कि पैदल यात्रियों के लिए रिजर्व कर दी जाएँ। अब आप कहेंगे कि यदि सड़के पैदल यात्रियों के लिए रिजर्व कर दी जाएँगी तो गाड़ियाँ कहाँ चलेंगी? गाड़ियाँ कहाँ पार्क की जाएँगी? अरे भाई समझे नहीं? गाड़ियों ही को तो सड़कों पर आने से रोकना है। सड़कें पैदल यात्रियों के लिए रिर्जव हो जाएंगी तो सड़कों पर गाड़ियाँ क्यों चलेंगी? एक तीर से दो शिकार। दो नहीं तीन, चार, पाँच, छह ... कई शिकार एक साथ। पटरियों पर लोग आराम से रहेंगे और काम–धंधे करेंगे। पैदल लोग सड़कों पर सीना तान कर चलेंगे। गाड़ियाँ बन्द हो जाएंगी तो पार्किंग की समस्या भी अपने आप ही हल हो जाएगी। न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी। साथ ही प्रदूषण–प्रदूषण जो चिल्ला रहे हैं वो मामला भी एक झटके में ही निपट जाएगा। साँप भी मर जाएगा और लाठी भी न टूटेगी। लाठियाँ बच जाएंगी तो वो आत्मरक्षा कैंपों की शाखाओं में प्रशिक्षण के काम में जाएंगी। पाँचों उँगलियाँ घी में और सर कड़ाही में। इससे अच्छी सिफारिश हो ही नहीं सकती।

मो० : ०६५५५६२२३२३

जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ का साप्ताहिक सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न

आंग्ल नव वर्ष के प्रथम दिवस एक जनवरी २०१७ दिन रविवार को जिला वेद प्रचार संगठन, लखनऊ द्वारा संचालित वेद प्रचार मण्डल प्रथम जानकीपुरम, विस्तार सेक्टर–एफ के आदर्श उद्यान में उत्साह पूर्वक सैकड़ों धर्म–प्रेमी नर–नारियों व बच्चों की उपस्थिति में मनाया गया।

शास्त्री के ब्रह्मत्व में आचार्य विश्वव्रत सायं ३.०० बजे प्रथम सत्र में यज्ञ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। मुख्य यजमान श्री शेष नारायण मिश्र धर्म पत्नी श्रीमती रीता देवी अन्य यजमान गण श्री संजीव मिश्रा–श्रीमती सुनीता मिश्रा, श्री दयाराम पाण्डेय–श्रीमती अनीता पाण्डेय, सुधीर त्रिपाठी श्रीमती रंजना त्रिपाठी थे। प्रथम सत्र के समापन के पश्चात द्वितीय सत्र में श्रीमती प्रियंका शास्त्री द्वारा सुमधुर स्वर में भजन प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात श्री प्रेम मुनि द्वारा योगदर्शन के सूत्र पर सुन्दर व्याख्या की। इसके उपरान्त डॉ० सत्यकाम आर्य द्वारा ऋग्वेद के मंत्र की बड़ी सुन्दर–सरल समीक्षा मनुष्य की वाणी को लेकर की। इसके बाद श्रीमती कविता सहगल व अन्य ब्रह्मचारियों ने मधुर स्वर में भजन गाया। अमृतमीन ने परमात्मा व जीवात्मा के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर चर्चा की। इसके पश्चात आचार्य विश्वक्रत शास्त्री ने आंग्ल नया वर्ष एवं अपने भारत देश में ऋतु के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को मनाये जाने वाले नव वर्ष की बड़ी सुन्दर व्याख्या करके उपस्थित जन समूह को मंत्र मुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के अन्त में मण्डल अध्यक्ष श्रीमती हीरामणि त्रिपाठी ने आये हुए विद्वानों एवं उपस्थिति धर्म प्रेमी महिलाओं बन्धुओं को धन्यवाद दिया। यज्ञ के पश्चात प्रथम मण्डल के पदाधिकारी गणों द्वारा वैदिक प्रचार–प्रसार के लिए, तथा सामजिक कलयाणार्थ शपथ ग्रहण की। अगला कार्यक्रम दिनांक ०८ जनवरी २०१७ को जानकीपुरम, विस्तार के सेक्टर ६ में सायं ३.०० बजे से सायं ५.३० तक होगा। सभी बन्धु–बान्धवों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभ उठावें।

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान- ०६४१२६७८५७१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, सम्पादक- ६४५१८८१७७७
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com
सम्पादक आर्य मित्र ई-मेल आईडी : samadakaryamitra@gmail.com

सेवा में,
.....
.....
.....

फकीरी नुस्खे

स्वास्थ्य चर्चा

श्री मधुसूदन राम जी शर्मा

1. बुखार– सिन्धुवार की जड़ हाथ में बांधने से बुखार उतर जाता है।

2. त्रिफला के उपयोग– ५० ग्राम त्रिफला (आंवला, हर्रे, बहेड़ा) का चूर्ण, शुद्ध शहद और तिल के तेल में मिलाकर चाटने से खांसी, दमा, बुखार, धातुक्षीणता, पेट के समस्त रोग जड़ से समाप्त हो जाते हैं। ऋषियों ने यहाँ तक कहा है कि इसे सुबह– शाम सेवन करने से शरी का कायापलट हो जाता है। सूजाक, बवासीर में पूरा आराम मिलता है। स्त्रियों का प्रदररोग, प्रसूत तथा मासिक की गड़बड़ी जड़ से चली जाती है।

3. खाँसी–सर्दी– बाक्स (आडूसा) का रस ११ ग्राम ६६४ मिलग्राम, शहद ११ ग्राम ६६४ मिलीग्राम, के साथ सेवन करे तो यह खाँसी, सर्दी, पुराने बुखार आदि को जड़ से समाप्त कर देता है।

4. आँख की फूली धुँधलापन– गदहपूरना का रस आँख में डालने से आँख की फूली, माणी, धुँधलापन आदि रोग दूर हो जाते हैं।

5. गर्भ न गिरना – अशोक के बीज का एक दाना लेकर सिल पर घिसकर बछड़े वाली गाय के दूध में मिलाकर स्त्री को देने से गर्भपात रुक जाता है।

6. स्त्री का गर्भ न टिकता हो– आम के वृक्ष का अतर छाल, एक फूल लवंग गर्भवती स्त्री को खिला देने से गर्भ धारण हो जाएगा।

7. दर्द– सहिजन के जड़ की छाल को बिना पानी के पीसकर दर्द में लगाने से शीघ्र आराम हो जाता है।

8. फाइलेरिया– फाइलेरिया के रोगी को जब दर्द हो, चाहे सूजन हो जाये तो सहिजन और सिंधुवार (सैंधाकचरी) के पत्तों को किसी कच्चे मिट्टी के बर्तन में गरम करे, जब गरम हो जाये तो जहाँ पर फाइलेरिया हो वहाँ बांधने से तुरन्त आराम हो जाता है।

9. टूटी हुई हड्डी को जोड़ना, गुप्त चोट में आराम–
(क) नागफनी का एक पूरा टुड़ा आग में डाल दे, भुन जाने पर कांटे छील डाले और बीच में फाड़कर आँबाहलदी, खारी, सेंधा नमक का चूर्ण कपड़छान कर उसे दे और चोट पर बांध दे। २४ घण्टे के बाद खोले, उसी तरह फिर तैयार कर बांधे। सात दिनों में टूटी हड्डी जुड़ जाएगी।
(ख) हडजोड़ जो पेड़ों पर पलता है बिना जड़ के, कहीं कहीं इसे चौराहा जी कहते हैं। अगर महुआ के वृक्ष पर मिल जाये तो उत्तम, न मिले तो कहीं किसी वृक्ष पर हो, उसे पीसकर शुद्ध घी में भून ले और आँबाहलदी, खारी, सेंधा नमक का चूर्ण मिलाकर बांधने तथा हड़जोड की पकौड़ी (माजिये) सेवन करने से टूटी हड्डी तथा गुप्त चोट ठीक होती है।

10. दन्तरोग तथा दर्द– (क) मदार (आक) या थूहर के दूध को रूई में भिगोकर दांतों के घाव पर रखने से दांतों का दर्द दूर हो जाता है और घाव भी भर जाता है।
(ख) गुलाइची वृक्ष का या छीतवन का दूध रूई में रखकर दातों पर रखने से दांतों का दर्द चला जाता है।

11. दन्तमंजन– बादाम के छिलके तथा नीम की डाल का कोयला बना ले। डम्पर का बीज, बबूल की छाल, काली मिर्च, सफेद इलायची, चूल्हे की मिट्टी तथा लाहौरी नमक–इन्हें समान भाग लेकर कूट–छानकर नित्य मंजन करे। यह पायरिया तथा हिलते दाँतों को मजबूत तथा साफ रखता है।

12. पयारिया एवं दाँत हिलना– तूतिया और फिटकरी एक किलो पानी में पकाये। जब एक भाग जल जाय और तीन भाग बच जाये तो शीशी में रख लें, रोज थोड़ा गरम करके कुल्ला करे तो रोग ठीक हो जायेगा।

13. कान का दर्द तथा बहना– नीम की मुलायम पत्ती का रस तथा रस के बराबर शुद्ध शहद मिलाकर कान में डालने से बहता कान, कान का दर्द तथा बहरापन दूर हो जाता है। नीम की पत्ती का रस हथेली द्वारा निकालना चाहिए।

14. खाज, गजकर्ण, अपरस, खुजली का मरहम– अकवन का दूध, नीला थूथा का दूध, गन्धक, फिटकरी, सुहागा, नौसादर प्रत्यके वस्तु को ११ ग्राम ६६४ मिलीग्राम लेकर लोहे के बर्तन में खरल कर खूब बारीक मरहम जैसा बना ले। घाव को नीम के पत्ते युक्त गरम जल से अच्छी तरह साफ कर ले। जब घाव का पानी सूख जाये तो मरहम को नारियल के तैल में मिलाकर लगाये।

15. श्वेत कुष्ठ (सफेद कोढ़) – तिल के तेल में नौसादर मिलाकर लगाने से सफेद कोढ़ के दाग मिट जाते हैं।

16. तेज ज्वर – (क) काली मिट्टी की पट्टी पेट पर लगाने से आधे घण्टे में तेज ज्वर शान्त हो जाता है।
(ख) तेज ज्वर में ठण्डे पानी से सिर धोने या ठंडे जल का कपड़ा भिगोकर सिर पर रखने से ज्वर कम हो जाता है।

17. दमा या श्वासरोग– (क) आम के कच्चे पत्तों को सुखाकर चीलम में भरकर पीने से दमा रोग नष्ट होता है।
(ख) बेर के पत्तों को पीसकर घी में भूनकर तथा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करने से दमा रोगी को आराम मिलता है।
(ग) अजवाइन को पान में डालकर चूसने से खाँसी तथा श्वासरोग नष्ट हो जाते हैं।
(घ) मदार के चार–पाँच पत्तों को आग में राख करके उस राख को रातभर पानी में रहने दें। सुबह छानकर पीने से श्वासरोग हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है।

18. आँख के रोहे का काजल– तूतिया को गुलाब जल में पीसकर रख ले, सरसों के तैल के दीपक में रूई की बत्ती से काजल पार लें, बाद में पीसा हुआ तूतिया–गुलाबजल मिला ले, हो सके तो पुराने गाय का घी में फेंट ले। फिर रोहे वाले आंख में लगाये।

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भाँति ऋषि बोधेत्सव का आयोजन २३, २४, २५ फरवरी २०१७ (गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ

दिनांक १८ फरवरी २०१७ से २४ फरवरी २०१७ तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्रीमती अंजलि (करनाल), श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्षः डॉ० पूनम सूरी
(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

मुख्य अतिथि : माननीय श्री विजय रूपाणी
(मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार)

विशिष्ट अतिथि : श्री एच आर गन्धार
(प्रशासक डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी, जालन्धर)

अध्यक्षता श्रद्धांजलि सभा : श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल
(प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान् : स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक (रोजड़), स्वामी आर्येशानन्द जी (माउन्ट आबू), स्वामी शान्तानन्द जी (गुजरात), श्री मोहन भाई कुण्डारिया (स्थानीय सांसद), श्री बल्लभभाई कथीरिया (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), श्री बावनभाई मेतालिया (स्थानीय विधायक), श्री कान्ति भाई अमरतिया (विधायक मौरबी), डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री (पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कत अकादमी) , श्री एस.के.शर्मा (मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), श्री गिरीश खोसला (यू.एस.ए.), श्री वाचोनिधी आर्य (गांधीधाम) एवं इसके अतिरिक्त देश–विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थिति रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकार" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली –१ अथवा टंकारा, जिला मौरबी–३६३६५० (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज, शिक्षण संस्थान तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भिजवायें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें, जिससे व्यवस्था बाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा ८० जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

आप दान राशि सीधे पंजाब नेशनल बैंक में खाता संख्या ४६६५०००१०००१०६७ IFSC-PUNB0466500 में भी जमा करा सकते हैं। कृपया जमा राशि की सूचना दिल्ली कार्यालय को जमा रसीद, अपने पूरे पते सहित अवश्य भेजें ताकि दान की रसीद भिजवानें में सुविधा हो।

–: निवेदक :–

शिवराजवती आर्या
उप–प्रधाना

रामनाथ सहगल
मन्त्री

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, जिला मौरबी ३६३६५० (गुजरात) दूरभाष : (०२८२२) २८७७५६

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।